सरसों की उन्नत खेती

सरसों की खेती के लिए झारखण्ड की जलवायु एवं मिट्टी काफी उपयुक्त है। कुछ वर्षों से सरसों झारखण्ड में कृषकों के बीच बहुत लोकप्रिय होती जा रही है, क्यूंकि इससे कम सिंचाई व लागत में दूसरी फसलों की अपेक्षा अधिक लाभ प्राप्त हो रहा है। इसकी खेती मिश्रित एवं एकल फसल के रूप में आसानी से की जा सकती है। उन्नत सस्य क्रियाओं को अपनाकर किसान भाई सरसों की खेती से अच्छी ऊपज प्राप्त कर सकते है।

खेत की तैयारी:- बुआई से पहले खेत को दो-तीन बार देसी हल से जुताई कर पाटा चला कर खेत को तैयार करें।

बीज दर:- 5-6 किलो/हे.

बुवाई का समय:- 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर

किस्म का चुनाव:-

क्र. सं.	प्रभेद	ऊपज (कु./हे.)	तैयार होने की अवधि
1.	पूसा महक	17.5	118 दिन
2.	पूसा बोल्ड	19	135-140 दिन
3.	पूसा अग्रणी	14	110-120 दिन
4.	पूसा वरानी	22	120-130 दिन
5.	वरुणा	20	125-130 दिन
6.	भरत सरसों-1	22	143 दिन
7.	पूसा सरसों - 30	18-19	137 दिन

बुआई की दूरी:- 30 से.मी. (पंक्ति से पंक्ति) 10 से.मी. (पौधा से पौधा)

बीजोपचार:- कवकनाशी कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

उर्वरक की मात्रा:- 80:60:40:20 किलो ग्राम नत्रजन:फोस्फोरस:पोटाश:सल्फर प्रति हेक्टेयर। इसकी आपूर्ति के लिए यूरिया 124 किलो, डी. ए. पी. 132 किलो, म्यूरेट ऑफ़ पोटाश 66 किलो और जिंक सल्फेट 20 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। सिंचित स्थितियों में नत्रजन की आधी मात्रा व फोस्फोरस, पोटाश और सल्फर की पूरी मात्रा को बुआई के समय तथा शेष नत्रजन को पहली सिंचाई के बाद उपरिवेशन करें. असिंचित फसल में सभी पोषक तत्वों की पूरी मात्रा को बुवाई के समय हीं डाला जाता है।

निकाई-गुड़ाई:- खरपतवार नियंत्रण के लिए खेत की अंतिम तैयारी के समय फ्लुक्लोरालिन 45 ई. सी. 2.2 ली./हे. की दर से 800 लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें अथवा पेंडीमिथेलीन 30 ई. सी. 3.3 लीटर/ हेक्टेयर को 800 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के तुरंत बाद छिडकाव करना चाहिए। अन्यथा बुआई के 20-25 दिन बाद एक और 45-60 दिन बाद दूसरी निकाई गुड़ाई करें।

सिंचाई:- न्यूनतम दो सिंचाई अति आवश्यक है। पहली 25-30 दिनों बाद एवं दूसरी 60-70 दिनों बाद।

पौधों का विरलीकरण- पौधों से पौधों की दूरी 10 से. मी. करने हेतु बुवाई के 10-15 दिनों बाद उगे हुए कमजोर पौधों को निकाल देना चाहिए जिससे बचे हुए पौधों को सही ढंग से पोषक तत्व मिलने के कारण पौधे अधिक स्वस्थ रहते है।

पंक्तिबद्ध सरसों की एकल फसली खेती

पूसा महक

पूसा सरसों-30 (एल.ई.एस.-43)